समेति न्यूज

राज्य का एकमात्र राज्यस्तरीय कृषि प्रबंधन, प्रसार एवं प्रशिक्षण संस्थान

अंक-3, भाग-1 : जून '2005

एक्सटेंशन रिफोर्म्स - झारखण्ड

झारखण्ड राज्य में आत्मा मॉडल का विस्तारीकरण

समेति के प्रकाशनों का विमोचन

4 जून '2005 को आयोजित "*खरीफ कार्यशाला 2005*" के उद्घाटन के अवसर पर मान्नीय कृषि मंत्री श्री सत्यानंद भोक्ता जी के कर कमलों से समेति, झारखण्ड द्वारा प्रकाशित "**समेति वार्षिक प्रतिवेदन 2005-06**" एवं "**पार्टीस्पेटरी रूरल एप्रेजल (पी.आर.ए.) - टूल्स एवं टेक्नीक्स**" नामक दो पुस्तकों का विमोचन सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विकास आयुक्त श्री एम. के. मण्डल, प्रधान सचिव (कृषि) श्री ए. के. सरकार, कृषि निदेशक श्री वी. जयराम तथा संयुक्त सचिव (कृषि) डा. डी. के. सक्सेना आदि विशिष्ट अतिथियों के साथ-साथ राज्य के संयुक्त कृषि निदेशक, सभी जिलों के जिला स्तरीय कृषि, उद्यान एवं भूमि संरक्षण पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

श्री सत्यानंद भोक्ता
कृषि मंत्री
झारखण्ड सरकार

राज्य के चार जिलों में कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा) एवं राज्य स्तर पर राज्यस्तरीय कृषि प्रबंधन, प्रसार एवं प्रशिक्षण संस्थान (समेति) का प्रदेश के कृषि परिदृश्य में नवीन बदलाव में सराहणीय योगदान रहा है। कृषि के भौगोलिक दशा एवं वातावरण तथा स्थानीय परिवेश के अनुकूल देशज कृषि एवं आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकी के सामंजस्य द्वारा कृषि शोध एवं प्रसार कार्यक्रमों का त्वरित गति से विस्तार के साथ-साथ प्रदेश कृषि परिदृश्य में नवीनतम बदलाव लाना ही इन संस्थानों का मुख्य ध्येय है।

समेति ने अल्प समय में आधुनिक रूप से सुसज्जित राज्य का एकमात्र संस्थान का मूर्त्त रूप धारण कर कृषि प्रसार से जुड़े लोगों में प्रबंधकीय क्षमता तथा मानवीय संसाधन विकास में उल्लेखनीय योगदान प्रदान की है। प्रखण्ड, जिला एवं राज्यस्तरीय 29 प्रशिक्षण कार्यक्रमों, 11 कार्यशालाओं एवं किसानों के लिए दो एक्सपोजर विजिट का आयोजन कर राज्यस्तर पर अपनी महत्ता सिद्ध की। समेति ने कृषि क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी के व्यवहार हेतु 10 कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं वेबसाईट की स्थापना तथा विकास द्वारा झारखण्ड कृषि को सूचना तकनीकी क्षेत्र में नई राह एवं राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की है।

इन परियोजना को राष्ट्रीय स्तर पर काफी सराहना मिली है और इनके सफलतम कहानियों एवं प्रदेश कृषि परिदृश्य में प्रशंसनीय योगदान से अभिप्रेरित होकर जुलाई 2005 से दसवीं पंचवर्षीय योजनान्तर्गत केन्द्र प्रायोजित परियोजना "**सपोर्ट टू स्टेट एक्सटेंशन प्रोग्राम फॉर एक्सटेंशन रिफर्म्स**" के अधीन राज्य में समेति और आठ जिलों में "आत्मा" मॉडल का विस्तारीकरण को 90 प्रतिशत केन्द्रीय अनुदान तथा 10 प्रतिशत राज्यांश द्वारा चालू रखने की स्वीकृति दी गई है।

आत्मा मॉडल के विस्तारीकरण से जिला अन्तर्गत कृषि एवं सम्बंधित क्षेत्रों के विकास गतिविधियों एवं समेति के माध्यम से कृषि प्रसार से जुड़े पदाधिकारियों के साथ-साथ कृषि क्षेत्र के नवीनतम तकनीकों को राज्य के सुदूरवर्ती क्षेत्रों के किसानों तक त्वरित गति से प्रचार-प्रसार को बल मिलेगा। "समेति न्यूज" के इस नवीनतम अंक से कृषि से जुड़े लोग लाभान्वित होंगे और आशा की नई किरण का अभ्युदय होगा।

(सत्यानंद भोक्ता)

प्रगतिशील किसानों का नियाम, जयपुर में प्रशिक्षण

समेति, झारखण्ड के सौजन्य से राँची, पश्चिम सिंहभूम एवं दुमका जिलों के कुल 10 प्रगतिशील किसानों को राष्ट्रीय कृषि विपणन संस्थान (नियाम), जयपुर में 28 फरवरी से 1 मार्च '2005 तक "*भविष्य के कृषि विपणन व्यवस्था के लाभ, भावी संरचना और चुनौती*" विषयक प्रशिक्षण में भाग लेने का अवसर मिला।

प्रशिक्षण से प्रदेश के किसानों को नवीनतम एवं भावी बाजार व्यवस्था एवं नीति तथा इनके चुनौती और अवसरों के व्यवहारिक पहलुओं को जानने का अवसर मिला।

एग्रोटेक किसान मेला-2005

समेति, झारखण्ड ने "आत्मा" के शोध-प्रसार गतिविधि एवं समेति कार्यक्रमों से कृषि से जुड़े लोगों को अवगत कराने के उद्देश्य से

"**एग्रोटेक किसान मेला**" में प्रदर्शनी लगायी। 24-26 फरवरी '2005 को बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, राँची में आयोजित इस मेले में महामहिम राज्यपाल मो. सिब्ते रज़ी जी, झारखण्ड सरकार के विकास आयुक्त श्री एम. के. मण्डल, प्रधान सचिव (कृषि) श्री ए. के. सरकार, कृषि निदेशक श्री वी. जयराम एवं संयुक्त सचिव (कृषि) डा. डी. के. सक्सेना एवं भारी संख्या में किसानों ने समेति स्टॉल का अवलोकन किया।

मेले में चलचित्र, फोटो प्रदर्शनी एवं समेति प्रकाशन के माध्यम से स्टॉल स्थापित की गई। समेति द्वारा प्रकाशित एग्रोटेक कैलेण्डर-2005 एवं कृषि प्रसार एवं प्रबंधन संबंधी विषयों पर आधारित पुस्तकों की काफी मांग रही। किसानों ने उचित मूल्य पर इन प्रकाशनों का क्रय किया।

मेले में आत्मा-दुमका एवं आत्मा-चाईबासा जिले के कुल 70 किसानों ने भाग लिया। किसानों ने विश्वविद्यालय परिसर स्थित स्थायी खाद प्रयोगिक प्रक्षेत्र एवं दीर्घकालीन उर्वरक के प्रभाव संबंधी प्रक्षेत्रों का भ्रमण किया।

राष्ट्रीय बागवानी मिशन कार्यशाला

कृषि एवं गन्ना विकास विभाग एवं समेति, झारखण्ड के संयुक्त तत्वावधान में 10 मार्च '2005 को राष्ट्रीय बागवानी मिशन पर राज्यस्तरीय कार्यशाला आयोजित की गई।

"*स्टेट कंसलटेशन फॉर नेशनल हॉर्टिकल्चर मिशन इन झारखण्ड*" विषयक कार्यशाला का उद्घाटन विकास आयुक्त श्री एम. के. मण्डल ने की। इस अवसर पर श्री मंडल ने कहा की राज्य में वर्षा जल का मात्र 28 फीसदी उपयोग हो रहा है। प्रदेश में कृषि को लाभकारी बनाने के लिए जल संरक्षण, बाजार-व्यवस्था आधारित कृषि उत्पाद का उत्पादन एवं व्यवसायिकीकरण की आवश्यकता है।

प्रधान सचिव श्री ए.के. सरकार ने बताया की प्रदेश की 15-20 लाख हेक्टेयर भूमि टांड एवं अनुपयोगी है, जहाँ सब्जी उत्पादन के साथ सभी बागवानी फसलों का उत्पादन काफी लाभदायक सिद्ध हो सकता है।

कार्यशाला के तकनीकी सत्र में संयुक्त सचिव (कृषि) एवं निदेशक (उद्यान) डा. डी. के. सक्सेना ने "राष्ट्रीय बागवानी मिशन" की जानकारी देते हुए झारखण्ड प्रदेश के परिपेक्ष्य में मिशन की कार्ययोजना पर प्रकाश डाला।

कार्यशाला में बैंगलौर के जैविक खाद विशेषज्ञ श्री सैमुएल मोहन ने "*जैविक खेती की उपयोगिता एवं व्यवहार*" संबंधी उपयोगी जानकारी दी।

इस मौके पर हॉलैण्ड के फलोरेंस फ्लोरा एवं अंथुरा कंपनियों के प्रतिनिधियों ने "*बागवानी विकास*" पर तैयार रिपोर्ट को प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन समेति निदेशक डा. ए. के. सरकार ने किया। इस अवसर पर राज्य के सभी जिलों के जिलास्तरीय कृषि, भूमि संरक्षण, उद्यान एवं पौधा संरक्षण पदाधिकारियों सहित 60 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कृषि प्रबंधन के नवीनतम तकनीकों का प्रसार

समेति, झारखण्ड ने आत्मा-पलामू जिले में शोध एवं प्रसार गतिविधि को बढ़ावा देने के उद्देश्य से "**कृषि प्रबंधन के नवीनतम तकनीक**" विषयक तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 3-5 मार्च '2005 तक चियांकी स्थित क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र में किया।

क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र एवं कृषि विज्ञान केन्द्र, चियांकी के सहयोग एवं समन्वय से संचालित इस कार्यक्रम का उद्घाटन सह-निदेशक डा. बी. के. भगत ने किया। कार्यक्रम का संचालन कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रशिक्षक संगठक-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम समन्वयक डा. प्रशांत कुमार ने किया।

कार्यक्रम में सह-निदेशक डा. बी. के. भगत ने "*सब्जी उत्पादन, भंडारण एवं मूल्यवर्द्धन की उन्नतशील तकनीक*" तथा प्रशिक्षक संगठक डा. प्रशांत कुमार ने "*फल एवं सब्जियों के तुड़ाई उपरांत उचित देख-भाल एवं परिरक्षण के द्वारा मूल्यवर्द्धन*" विषयक जानकारियाँ दी। कनीय वैज्ञानिक श्री उदय प्रसाद ने "*वर्षा आधारित खेती की उन्नत तकनीक*", मो. एखलाक अहमद ने "*अधिक उत्पादन हेतु उन्नतशील प्रभेद*", डा. राजीव कुमार ने "*समेकित पौधा रोग एवं कीट प्रबंधन*", श्री प्रमोद कुमार ने "*उन्नत कृषि उपकरण एवं संयंत्र*", श्रीमती सुप्रिया सिन्हा ने "*औषधीय एवं सुगंधित पौधे की खेती*" की तकनीकी विधाओं से प्रतिभागियों को अवगत कराया।

विशिष्ट अतिथि के रूप में समेति निदेशक डा. ए. के. सरकार ने "*समेकित पोषक तत्व प्रबंधन*" से अवगत कराते हुए बताया कि पलामू की मिट्टी में पोषक तत्वों का ह्रास हो रहा है। किसानों को अपने खेतों की उर्वरा शक्ति बरकरार रखने के लिए संतुलित मात्रा में उर्वरकों के साथ जैविक खाद को व्यवहार में लाना होगा। इस अवसर पर वरीय वैज्ञानिक (मृदा) डा. डी. के. शाही ने "*जीवाणु एवं जैविक खाद*" के महत्व एवं व्यवहार पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम में पलामू जिले के सभी 12 प्रखंडों के प्रखण्ड तकनीकी टीम के प्रभारी, प्रखण्डस्तरीय फारमर्श इंटेरेस्ट ग्रुप के अध्यक्ष एवं प्रगतिशील किसानों सहित 123 प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

राज्यस्तरीय रबी किसान मेला-सह-कृषि प्रदर्शनी

कृषि एवं गन्ना विकास विभाग, झारखण्ड सरकार द्वारा आयोजित राज्यस्तरीय "*रबी किसान मेला-सह-प्रदर्शनी*" में समेति, झारखण्ड के सौजन्य से आत्मा-जामताड़ा एवं आत्मा-पं. सिंहभूम के कुल 65 प्रगतिशील किसानों को भ्रमण कराया गया। मेले में कृषकों को कृषक द्वारा उत्पादित उन्नत कृषि उत्पादनों के साथ विभिन्न कृषि यंत्र, उपकरण एवं उपष्कर, कृषि संबंधी आवश्यक उत्पादन जैसे - उन्नत किस्म के बीज, उर्वरक एवं कीटनाशी दवा संबंधी जानकारी प्राप्त करने का अवसर मिला।

राष्ट्रीय कार्यक्रमों में समेति का सहयोग

मैनेज, हैदराबाद के सौजन्य से चन्द्रशेखर आजाद युनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर एंड टेक्नोलॉजी, कानपुर, उत्तर प्रदेश में 17-21 जनवरी '2005 तक "साइबर एक्सटेंशन: रोल्स ऑफ आई.सी.टी. फॉर एग्रीकल्चर एक्सटेंशन रिफोर्म्स" विषयक प्रशिक्षण कार्य्रक्रम में समेति संकाय सदस्य श्री मनोज कवि ने मैनेज के सूचना प्रौद्योगिकी निदेशक डा. भी. पी. शर्मा के मार्गदर्शन में आत्मा सेंटर के आई.सी.टी. प्रोग्राम्स एवं समेति के अनुभवों से कृषि विश्वविद्यालय के लगभग 50 संकाय सदस्यों को अवगत कराया।

इसी क्रम में 16-20 मई, '2005 तक आत्मा, पटना में मैनेज, हैदराबाद द्वारा आयोजित कार्यक्रम में बिहार राज्य के कृषि संवर्ग के पदाधिकारी एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों के प्रतिभागियों को समेति संकाय सदस्य ने प्रशिक्षण प्रदान किया।

प्रशिक्षण–सह–परिभ्रमण कार्यक्रम

समेति, झारखण्ड द्वारा राज्य स्थित तीन आत्मा जिलों के सभी प्रखण्डों के फारमर्श इन्टेरेस्ट समूह के अध्यक्ष एवं प्रगतिशील किसानों के लिए तीन चरणों में ''*कृषि प्रबंधन के नवीनतम तकनीक*'' विषयक तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन समेति सभागार में किया। प्रत्येक कार्यक्रम में आत्मा जिलों के 30–30 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

प्रशिक्षण–सह–परिभ्रमण संबंधी इन कार्यक्रमों में 7–9 मार्च तक आत्मा–पं. सिंहभूम, 14–16 मार्च तक आत्मा–दुमका तथा 17–19 मार्च '2005 तक आत्मा–जामताड़ा के प्रतिभागियों ने भाग लिया।

इन कार्यक्रमों के प्रथम दिन कृषि निदेशक श्री वी. जयराम तथा संयुक्त सचिव (कृषि) डा. डी. के. सक्सेना ने क्रमशः प्रतिभागियों को ''*झारखण्ड कृषि की समस्याएँ, संभावनाएँ एवं प्राथमिकताएँ*'' की सविस्तार जानकारी के साथ–साथ कृषि विभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं के उद्देश्य एवं रूपरेखा से अवगत कराया गया।

इन तीन कार्यक्रमों के विभिन्न तकनीकी सत्रों में बी.ए.यू. के मुख्य वैज्ञानिक डा. आर. पी. सिंह एवं वरीय वैज्ञानिक डा. सुरेन्द्र सिंह द्वारा ''*झारखण्ड के मिट्टी में पोषक तत्वों की कमी की समस्या एवं समाधान*'' तथा ''*समेकित पोषक तत्व प्रबंधन*'' से प्रतिभागियों को अवगत कराया।

मृदा जीव इकाई के मुख्य वैज्ञानिक डा. एन. के. राय तथा वरीय वैज्ञानिक डा. डी. के. शाही ने ''*जीवाणु खाद के व्यवहार*'' की जानकारी देते हुए राइजोबियम कल्चर, पी.एस.बी. एवं एजेटोबैक्टर के उपयोग से 15–30 प्रतिशत लाभ की जानकारी दी गई। इसी तरह पौधा रोग विभाग के विभागाध्यक्ष डा. एस. एम. प्रसाद ने ''*समेकित पौधा रोग प्रबंधन*'' तथा कीट विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डा. देवेन्द्र प्रसाद द्वारा ''*समेकित कीट प्रबंधन*'' की जानकारी दी गई। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में कीट एवं रोग प्रबंधन विषय पर प्रतिभागियों की विशेष रुचि देखी गई और उनके अनेकों शंकाओं एवं समस्याओं के समाधान की जानकारी कृषि वैज्ञानिकों द्वारा दी गई।

अन्य तकनीकी सत्रों में बी.ए.यू. के पौधा प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डा. (श्रीमती) वायलेट केरकेट्टा, मुख्य वैज्ञानिक डा. जेड. ए. हैदर तथा वरीय वैज्ञानिक डा. डी. एन. सिंह द्वारा ''*झारखण्ड परिवेश अनुकूल अधिक उत्पादन हेतु उन्नतशील प्रभेद*'' तथा शस्य विभाग के मुख्य वैज्ञानिक डा. ए. राफे एवं वरीय वैज्ञानिक डा. आर. आर. उपासनी द्वारा ''*वर्षा आधारित खेती की उन्नत तकनीक*'', सेवानिवृत्त प्राध्यापक डा. बी. एन. प्रसाद द्वारा ''*उन्नत कृषि उपकरण एवं संयंत्र*'' तथा प्रसार निदेशालय की वरीय वैज्ञानिक डा. (श्रीमती) रेखा सिन्हा द्वारा ''कम लागत के कृषि उत्पाद'' विषयक जानकारियाँ दी गईं। प्रतिभागियों ने उक्त विषयों में विशेष रुचि ली।

प्रतिभागियों को समस्त तकनीकी ज्ञान का अवलोकन चलचित्र, शोध विषयक चित्र एवं छाया–चित्र के माध्यम से प्राप्त करने का अवसर मिला। राज्यस्तर पर समेति के इन प्रयासों से आधुनिकतम तकनीकी ज्ञान का प्रत्यक्ष

दर्शन से किसान काफी प्रभावित हुए एवं जिला स्तर पर इसी ढंग से कार्यक्रम आयोजन की आवश्यकता जताई।

कार्यक्रम में प्रतिभागियों को समेति द्वारा प्रकाशित समेति *एग्रो–टेक कैलेण्डर, कृषि प्रसार के नवीनतम तकनीक, जीवाणु एवं जैविक खाद* तथा *सब्जी उत्पादन की उन्नत तकनीक* संबंधी पुस्तकों के साथ–साथ सामुहिक फोटोग्राफ, प्रमाण–पत्र एवं फाईल बैग निःशुल्क वितरण किया गया।

कृषि वैज्ञानिकों का कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम

कृषि वैज्ञानिकों को कृषि शिक्षा, शोध एवं प्रसार क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी की नियमित व्यवहार की जानकारी एवं गतिशीलता प्रदान करने तथा विभिन्न वेबसाइटों पर उपलब्ध कृषि संबंधी विभिन्न जानकारी के लाभ से परिचित करवाने के उद्देश्य से समेति निदेशक-सह-अधिष्ठाता (कृषि) के निदेश पर समेति, झारखण्ड द्वारा बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के लिए दो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

25-27 एवं 28-30 अप्रैल '2005 को "*बेसीक आपरेशनल स्कील्स इन कम्प्यूटर*" विषयक तीन दिवसीय दो प्रशिक्षण कार्यक्रमों में कृषि संकाय के विभिन्न विभागों के कुल 22 नवनियुक्त वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

बी.ए.यू. के कम्प्यूटर सेंटर में आयोजित इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में समेति संकाय सदस्य मनोज कवि ने वैज्ञानिकों को कम्प्यूटर शब्दावली, एम. एस. प्वाइंट, नोट पैड, कैलकुलेटर, माइक्रोसोफ्ट, पावर प्वाइंट (स्लाइड्स, एनीमेशन, इफेक्ट्स), ई-मेल एवं इंटरनेट संबंधी तकनीकी एवं व्यवहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया।

सूचना प्रौद्योगिकी की विभिन्न विधाओं की जानकारी पाकर कृषि वैज्ञानिकों में काफी उत्साह देखा गया। सभी वैज्ञानिकों ने अपना ई-मेल स्वयं तैयार किया, विभिन्न वेबसाइटों से कृषि संबंधी नवीनतम तकनीकी जानकारी प्राप्त की। अल्प समय में सूचना तकनीकी संबंधी समेति, झारखण्ड के इन प्रयासों का कृषि वैज्ञानिकों ने काफी सराहना की।

इफको का राज्यस्तरीय प्रशिक्षण -सह- परिभ्रमण कार्यक्रम

इफको के सौजन्य से इफको, राँची एवं समेति, झारखण्ड के संयुक्त तत्वावधान में "*कृषि प्रसार के नवीनतम तकनीक*" विषयक राज्यस्तरीय कृषक प्रशिक्षण सह-परिभ्रमण कार्यक्रम 22-24 मार्च 2005 तक आयोजित की गई। कार्यक्रम में प. सिंहभूम, दुमका, जामताड़ा एवं राँची जिले के 46 प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का उद्घाटन फर्टिलाइजर कारपोरेशन ऑफ इंडिया के मुख्य कार्यकारी डा. एस. बनर्जी ने किया। उन्होंने कहा कि वर्त्तमान कृषि व्यवस्था मांग एवं गुणवत्ता पर निर्भर है और इस चुनौती का मुकाबला जनसहभागिता से किया जाना संभव है।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि इजराइल देश की शस्य वैज्ञानिक डा. पेटेरेसिया इमास ने कृषि तकनीकी प्रसार में कृषकों का साक्षर होना आवश्यक बताया।

तकनीकी सत्र में इफको के विक्रय विपणन पदाधिकारी डा. जी. के. चौधरी ने "*फसलोत्पादन के लिए उर्वरकों की आवश्यकता एवं संतुलित व्यवहार*", बी.ए.यू. के वैज्ञानिक डा. आर. पी. सिंह, डा. एस. एम. प्रसाद, डा. देवेन्द्र प्रसाद, सुश्री आरती बीना एक्का, डा. (श्रीमती) रेखा सिन्हा, डा. आर. आर. उपासनी एवं डा. जेड. ए. हैदर ने नवीनतम कृषि तकनीकी के विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी।

प्रतिभागियों को 23 मार्च 2005 को हार्प, प्लाण्डु का प्रक्षेत्र परिभ्रमण-सह-तकनीकी सत्र में किसानों के साथ-साथ इफको के पदाधिकारीगणों ने भी भाग लिया।

हार्प, प्लाण्डू का परिभ्रमण

उद्यानिक फसलें कृषि के विविधीकरण का एक बेहतर विकल्प है। उद्यान फसलों के उत्पादन से लघु एवं सीमान्त कृषक काफी लाभान्वित हुए हैं। झारखण्ड प्रदेश की जलवायु विविध उद्यानिक फसलों के उत्पादन हेतु अनुकूल है और इस क्षेत्र में राज्य में काफी संभावनाएँ हैं।

समेति, झारखण्ड ने राज्य की परिस्थितियों के अनुकूल विकसित की गई सब्जियों की उन्नत किस्मों के प्रयोग, उक्त किस्मों के अनुकूल विकसित उत्पादन प्रौद्योगिकी के अंगीकरण एवं उत्पादन क्षेत्र में विस्तार के माध्यम से राज्य में सब्जी उत्पादन को बढ़ावा देने एवं प्रौद्योगिकी ज्ञान से कृषकों का प्रत्यक्ष लगाव जोड़ने हेतु प्रतिभागियों को बागवानी एवं कृषि वानिकी शोध कार्यक्रम केन्द्र (हार्प), प्लाण्डू का 8, 15 एवं 18 मार्च '2005 को परिभ्रमण कराया गया। हार्प, प्लाण्डू के प्रधान वैज्ञानिक डा. एस. कुमार के मार्गदर्शन में संस्थान के वरीय वैज्ञानिक डा. रणवीर सिंह एवं डा. विशाल नाथ ने परिभ्रमण में प्रतिभागियों को फल-फूल, सब्जी एवं औषधीय पौधों के किस्मों, फसल कैफटेरिया, सब्जी बीज उत्पादन, आम, लीची एवं आंवला आधारित फसल प्रणाली के साथ-साथ स्ट्राबेरी की खेती, गरमा फ्रेंचबीन की खेती के प्रक्षेत्रों का भ्रमण कराया। संस्थान द्वारा किसानों को हार्प द्वारा प्रकाशित तकनीकी पुस्तकों का निःशुल्क वितरण किया गया।

इस क्रम में संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा तकनीकी सत्र का भी आयोजन किया गया। इन अवसरों पर प्रत्येक जिलों के कृषकों के साथ प्रधान वैज्ञानिक डा. एस. कुमार एवं अन्य वैज्ञानिकों ने विचार-विमर्श की और उनकी समस्याओं को सुना तथा उचित सुझाव दिए।

तकनीकी सत्र में वरीय वैज्ञानिक डा. रणवीर सिंह ने ''*सब्जी उत्पादन, भंडारण एवं मूल्यवर्द्धन की उन्नतशील तकनीक*'' तथा डा. विशाल नाथ द्वारा ''*फल एवं सब्जियों के तुड़ाई उपरांत उचित देख-भाल एवं परिरक्षण के द्वारा मूल्यवर्द्धन*'' विषयक तकनीकी ज्ञान से परिचित कराया। परिभ्रमण कार्यक्रमों से किसान काफी प्रभावित हुए। कृषकों ने संस्थान द्वारा उत्पादित फसलों के विभिन्न किस्मों के बीजों का भारी मात्रा में क्रय किया जिससे किसानों की जागरूकता एवं उनकी आवश्यकता का आभास मिलता है।

आत्मा जिलों के बढ़ते कदम

आत्मा, दुमका

उत्तरांचल राज्य का परिदर्शन

आत्मा, दुमका द्वारा जिले के बी.टी.टी. सदस्यों के 20 सदस्यीय दल को उत्तरांचल राज्य के विवेकानंद पर्वतीय कृषि अनुसंधान केन्द्र, अल्मोड़ा, गोविन्द बल्लभ पंत कृषि विश्वविद्यालय, पंतनगर तथा केन्द्रीय मृदा एवं जल संरक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, देहरादुन का दस दिवसीय परिदर्शन कराया गया। अल्मोड़ा में पर्वतीय अनुसंधान के कार्यक्रमों का अवलोकन डा. एम. आर. हुडा के द्वारा कराया गया। वहाँ की एक विशेषता यह थी कि जल श्रोत जिसे स्थानीय भाषा में ''नेवला'' के नाम से जाना जाता है, इसके अन्तर्गत पानी का संचय करना, कम लागत पर सिंचाई की अच्छी व्यवस्था की तकनीकों का परिदर्शन कराया गया।

पंतनगर में विश्वविद्यालय के सभी प्रभागों (कृषि, पशुपालन, उद्यान एवं मत्स्य) के परिदर्शन के साथ विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित वार्षिक किसान मेला में कृषि तकनीकी की नवीनतम विधाओं को देख किसान काफी प्रभावित हुए।

केन्द्रीय मृदा एवं जल संरक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, देहरादुन में भूमि संरक्षण एवं जल संरक्षण के अनेकों महत्वपूर्ण तकनीक एवं सबंधित स्थलों का परिदर्शन दल के साथ सहस्त्रधारा स्थल पर भूमि संरक्षण एवं जल संरक्षण पर किये गये अनुसंधान कार्यों के परिदर्शन का भी अवसर मिला।

अनुसंधान-प्रसार-कृषक समन्वय

अनुसंधान-प्रसार-कृषक समन्वय कार्यक्रम अधीन आत्मा, दुमका के सौजन्य से क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र (बिरसा कृषि विश्वविद्यालय), दुमका द्वारा रब्बी 2004 में रब्बी/सब्जी फसलों का प्रबंधन एवं उत्पादन विषय पर आवासीय प्रशिक्षण एवं कृषक परिभ्रमण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इन प्रशिक्षण एवं कृषक परिभ्रमण कार्यक्रमों को डॉ. ए. के. सरकार, निदेशक, समेति, झारखण्ड एवं नोडल ऑफिसर (एनएटीपी) बी.ए.यू., राँची के मार्गदर्शन में क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, दुमका के वैज्ञानिक डॉ. पी. के. सिंह, डॉ. पी. बी. साहा, डॉ. ए. के. साहा, श्री डब्लू आईन्द एवं श्री कृष्णा प्रसाद द्वारा जिले के किसानों के लिए उपर्युक्त एवं आवश्यकतानुसार के आधार पर प्रदान किया गया। कार्यक्रम से कृषि विभाग के पदाधिकारी एवं जनसेवक दुमका जिले के किसान क्लब एवं कृषक सलाहकार समिति के सदस्यों के साथ पर्याप्त संख्या में महिला कृषकों सहित 203 कृषक लाभान्वित हुए।

क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र तथा आत्मा दुमका के अनुसंधान-प्रसार-समन्वय कार्यक्रम के अन्तर्गत निम्न प्रयोग किसानों के प्रक्षेत्र में उनकी सहभागिता से रब्बी 2004-05 में किया गया :

(क) राई-सरसों में समेकित कीट प्रबंधन

यह अनुसंधान मध्यम सिंचित जमीन में धान-सरसों फसल पद्धति के अन्तर्गत तीन सामाजिक एवं आर्थिक समूह के किसान पहड़िया, संथाल तथा गैर आदिवासी के यहाँ क्रमश: तीन गांव बसमता (जरमुंडी प्रखंड) मंझलाडीह (शिकारीपाड़ा प्रखण्ड) तथा बारीडीह (बारीडीह प्रखण्ड) एवं सैरयाहाट में चार राई-सरसों की प्रजाति शिवानी, सीडटेक-111, वरुणा तथा बी.-9 पीला सरसों में किया गया। सक्रिय सहभागिता से समेकित कीट प्रबंधन अपनाकर चारों प्रजाति में अधिक उपज तथा लाभ मिला। राई समूह में शिवानी, सीडटेक-111 ने वरूणा से अच्छी पैदावार दिया जबकि पीला सरसों में माहू का प्रकोप कम हुआ।

(ख) बीज ग्राम के तहत बीज उत्पादन

बीज ग्राम के अन्तर्गत किसानों के यहाँ गेहूँ की लोक-1 तथा यू.पी.-262 का व्यापक पैमाने पर उत्पादन भरूनडीहा तथा बुढ़ियारी गाँव में किया गया। खरीफ में बीज ग्राम योजना के अन्तर्गत आई.आर.-64 तथा आई.आर.-36 का 400 क्वि. बीज का उत्पादन किया गया था जिससे कृषक सलाहकार समूह द्वारा प्रोसेसिंग कराकर बीज को पुन: किसानों के समूह द्वारा बेचा गया।

(ग) सरसों में संतुलित खाद का प्रयोग

यह प्रयोग मकरो (दुमका) जराकुरूवा (जरमुंडी) तथा भतुड़िया (रामगढ़) में किया गया। सिंगल सुपर फास्फेट का प्रयोग डी.ए.पी. के जगह करने से 18 प्रतिशत अधिक पैदावार पीला सरसों बी.-9 में प्राप्त हुआ फलस्वरूप ए.एस.पी. की मांग बढ़ी है।

(घ) आलू में समेकित पोषक तत्व प्रबंधन

संतुलित मात्रा में 50 प्रतिशत (आधा) नेत्रजन एवं फास्फेट तथा 100 प्रतिशत पोटाश को जीवाणु खाद के साथ आलू की प्रजाति कुफरी अशोका का प्रयोग करने से अधिक लाभ मिला। यह प्रयोग मकरो (दुमका) हथनंगा, गोवासोल (नसलिया) तथा बारीडीह (सैरयाहाट) में किया गया। अच्छी पैदावार को देखते हुए किसानों ने इस प्रजाति को बीज के रूप में प्रयोग के लिए शीत गृह में रखा है ताकि अगले वर्ष इसका उपयोग किया जा सके।

(ङ) गेहूँ में समेकित पोषक तत्व प्रबंधन

मकरो, जराकुरूवा, बारीडीह एवं भतुड़िया ग्राम में गेहूँ में समेकित पोषक तत्व प्रबंधन विषयक प्रत्यक्षण प्रयोग किया गया। खाद की संतुलित मात्रा की 50 प्रतिशत नाईट्रोजन एवं फास्फेट तथा 100 प्रतिशत पोटाश के साथ जीवाणु खाद (एजेटोबेक्टर + पी.एस.एम.) के साथ प्रयोग करने से अधिक लाभ मिला। यह प्रयोग गेहूँ की प्रजाति लोक-1 पर किया गया।

(च) मटर आरकेल प्रभेद का प्रवेश

यह अनुसंधान छोटाअमजोला, धोबनछिप्पा तथा लताबड़ा गाँव में किया गया। मटर आरकेल की फली का औसत उपज 51 क्विं. प्रति हेक्टर तक रहा। उपयुक्त प्रयोग में रासायनिक और जीवाणु खाद का प्रयोग किया गया।

(छ) पैरा फसल पद्धति

बालीजोर (शिकारीपाड़ा) में पैरा फसल की खेती अन्तर्गत धान की प्रजाति आई.आर.-64 के साथ तीसी, मटर और खेसाड़ी के साथ करने से किसानों के बीच बहुफसली व्यवस्था प्रचलित हुई इससे किसानों को काफी लाभ हुआ।

आत्मा, पं. सिंहभूम

गत् वर्ष रबी मौसम 2004-05 में आत्मा-प. सिंहभूम के सौजन्य से कृषि विज्ञान केन्द्र, जगरनाथपुर के तकनीकी सहयोग से जिले के 13 प्रखंडों में शोध प्रसार हेतु कृषकों की सहभागिता से किए गए समूह प्रत्यक्षण से 185 कृषक लाभान्वित हुए, जिसकी विवरण निम्नवत् है :

फसल	आच्छादित क्षेत्र	लाभान्वित कृषक (हेक्टेयर में)
गेहूँ (आंशिक चना)	20.00	140
मटर	2.00	35
मकई	2.00	10
कुल योग	24.00	185

प्रशिक्षण एवं परिभ्रमण कार्यक्रम

आत्मा, प. सिंहभूम द्वारा जिले में प्रखंड स्तर पर खाद्य प्रसंस्करण, लाह प्रशिक्षण, बागवानी, गरमा सब्जी, कम्प्यूटर का व्यावहारिक ज्ञान, नील हरित शैवाल, औद्योगिक वर्मीकल्चर विषयक प्रशिक्षण तथा पूसा कृषि मेला '05, एग्रोटेक मेला '05 एवं रबी किसान मेला '05 संबंधी परिभ्रमण कार्यक्रम आयोजित की गई। इन प्रशिक्षण एवं परिभ्रमण कार्यक्रमों से 829 कृषकों का समूह लाभान्वित हुआ।

आत्मा-जामताड़ा

रबी मौसम 2004-05 में आत्मा, जामताड़ा के सौजन्य से जिले के 4 प्रखण्डों के 17 गाँवों में विभिन्न रबी फसल प्रत्यक्षण से 38 फारमर्श इंटरेस्ट समूह लाभान्वित हुए, जिसकी विवरणी निम्न प्रकार है —

फसल	किस्म	प्रत्यक्षणों की संख्या	एफआईजी की सं.	औसत उपज
सरगुजा	टी-397	16	8	5.0
फ्रेंचबीन	अर्का कोमल	22	8	95.0
मटर	आरकेल	8	4	125
सरसों	टी-59/वरूणा	14	2	7.0
गेहूँ	एच.यू.डब्ल्यू. 234	16	16	-

लाह की खेती को प्रोत्साहन

आत्मा, जामताड़ा द्वारा जामताड़ा, नारायणपुर, नाला एवं कुण्डहित प्रखंड के प्रखण्ड तकनीकी टीम द्वारा सहजपुर, बिशुनपुर, बड़ा मझलाडीह, माझपहाड़ी, मदनाडीह, तेतुलिया टांड़, बाबूपुर, मोहनपुर एवं तुलसीचक गाँव से चयनित कृषकों को लाह अनुसंधान केन्द्र, नामकुम, राँची में 10 दिवसीय प्रशिक्षण दिला कर विभिन्न गाँवों में लाह (प्रभेद - रंगीनी) की खेती करायी गयी।

इस जिला में पलास एवं बेर के बहुतायत संख्या को देखते हुए सतत् कार्यक्रमों द्वारा कृषकों में जागृति तथा प्रशिक्षित कर 1000 पलास/बेर के पेड़ों पर लाह की खेती कराने से 110 कृषकों के समूह को लाभ पहुँचा। इससे कम लागत पर किसानों को आमदनी बढ़ाने का अवसर प्राप्त हुआ।

समन्वित मत्स्य पालन

आत्मा, जामताड़ा के सौजन्य से नारायणपुर प्रखंड में 17 सदस्यीय बड़ा मझलाडीह कृषक समूह को 0.20 हेक्टेयर क्षेत्र में मछली पालन के लिए समन्वित मत्स्य पालन के तकनीकी प्रशिक्षण प्रदत्त कर मत्स्य जीरा, सूअर तथा बत्तख उपलब्ध कराया गया। 20 मार्च '2005 को समूह के सदस्य श्री वसदेव मरांडी के तालाब के समीप प्रक्षेत्र दिवस आयोजित की गई। इस क्रम में तालाब से पहली बार 3.10 क्विंटल मछली निकाला गया। इन मछलियों का वजन 500 ग्राम - 1200 ग्राम तक था। इससे समूह को अल्प समय में ही कुल 15,500 रुपये की आमदनी हुई।

संपादक मंडली

अध्यक्ष : **श्री ए. के. सरकार** (भा.प्र.से.)
प्रधान सचिव (कृषि) एवं
अध्यक्ष (समेति), झारखण्ड

उपाध्यक्ष : **श्री वी. जयराम** (भा.प्र.से.)
स्टेट नोडल पदाधिकारी
(एनएटीपी, झारखण्ड)

मुख्य संपादक एवं प्रकाशक : **डा. असीम कुमार सरकार**
निदेशक, समेति, झारखण्ड

संपादक : **श्री अजय कुमार**
कार्यक्रम पदाधिकारी, समेति, झारखण्ड

संयोजक : **श्री मनोज कवि**
संकाय सदस्य (आई.टी.), समेति, झारखण्ड

समन्वयक : **श्री गोकुल मेहरा**
परियोजना निदेशक, आत्मा-दुमका
श्री एम.एस.ए.एम. शिवा
परियोजना निदेशक, आत्मा-जामताड़ा
डॉ. अजय कुमार
परियोजना निदेशक, आत्मा-जामताड़ा
डॉ. ब्रजेश कुमार
परियोजना निदेशक, आत्मा-पलामू

Published by Dr. A. K. Sarkar, Director, STATE AGRICULTURE MANAGEMENT & EXTENSION TRAINING INSTITUTE (SAMETI), Krishi Bhawan Campus, Kanke Road, Ranchi - 8 • Tel. : 0651-2232745 • Fax : 0651-2232746 • ISDN : 2233941/8
E-mail : sametijharkhand@rediffmail.com Website : www.sameti.org

866/08/05

KAILASH PAPER, TEL. : 0651-2532251